न समझा ।

E. Content - 4

* समेकित शिक्षा के सिद्धान्त Principle of Inclusive Education →

समेकित शिक्षा उस स्थिति में सम्पन्न होती है जब योग्य एवं अयोग्य दोनों प्रकार के बालक एक साथ एक ही कक्षा में अध्ययन करते हैं। शोध कार्यों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ऐसी स्थिति में अच्छी चीजें देखने को मिलती है मात्र दोनों को एक साथ बैठा देने से अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं। अच्छे परिणाम तभी प्राप्त होते हैं जब दोनों में

सक्रिय भागेदारी होती है योजना बनाने मे सहयोग करते है तथा प्रतिबद्धता आदि करते है

समेकित शिक्षा की गुणवत्ता निम्न सिद्धान्तों पर आधारित है —

(1) सभी बच्चे एक समान → समेकित शिक्षा
All children Alike — इस मूल्य सिद्धान्त पर आधारित है कि सभी बच्चे तथा व्यक्ति एक समान है तथा सभी को समान अवसर अवसर प्राप्त होने चाहिए। समेकित शिक्षा सभी बच्चों के हितार्थ है जो इनमें कम है या अधिक स्पष्ट या छिपी हुई। यह दोस्ती करने मदद बनाने आदि से सम्बन्धित है जिसमें वे सब सुविधायें मिलें जो प्रत्येक को मिलती हैं।

(2) सीखने के अलग-अलग तरीके Different ways of Learning → समावेश का मत उस सहायता से है जो बच्चों को सार्थक तरीके से सीखने एवं विभिन्न कार्यों में भाग लेने में मदद करती है कभी-2 दोस्तों तथा शिक्षकों द्वारा प्रदान की

गई सहायता बहुत अधिक सहायक सिद्ध होती है। दूसरों अवसरों पर विशेष तौर पर तैयार की गई सहायक सामग्री एवं तकनीकी भी लाभप्रद होती है। सार रूप में हम कह सकते हैं कि बालक को अधिक-से-अधिक सहायता प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।

③. प्रत्येक बालक का अधिकार (Every Child's Right) → समेकित शिक्षा बालक का अधिकार है किसी प्रकार का उपकार नहीं इस सम्बन्ध में जो एक्ट पारित किया गया है उसमें यह स्पष्ट उल्लेख है कि सभी असमर्थ बालक अपने हमउम्र साथियों के साथ चाहे वे समर्थ हो या असमर्थ, सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति उतनी ही पात्रता रखते हैं जितना कि अन्य कोई। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे बालकों को मुख्य धारा से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

④. व्यक्तिगत विभिन्नता पर आधारित → Based on Individual Differences

Scanned with CamScanner

PAGE No.
DATE: / / 201

कुछ छात्र अन्य छात्रों की तुलना में अधिकांश गुणों की दृष्टि से सर्वथा भिन्न होते हैं जिनक शिक्षा के प्रति विशेष झुकाव व रुचि होती है ऐसे छात्रों की आवश्यकताएँ विशिष्ट शिक्षा के माध्यम से पूरी करनी चाहिए। अतः ऐसे छात्रों की पहचान की जानी चाहिए जो इस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता अनुभव करते हैं ताकि उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का उपयुक्त स्वरूप निश्चित किया जा सके। साथ ही, ऐसे छात्रों की समय-2 पर व्यक्तिगत कठिनाइयों, समस्याओं एवं प्रगति का भी आकलन करते रहना चाहिए।

Congenial Atmosphere
(5) सहज, सजीव एव सौहार्दपूर्ण वातावरण – जहाँ तक सम्भव हो सके इस प्रकार के बालक के लिए इस प्रकार के वातावरण का निर्मा किया जाना चाहिए जो सहज, सजीव ए आनन्ददायक हो। इस प्रकार की व्यव की जानी चाहिए जहाँ इन बालकों व

Scanned with CamScanner

PAGE No
DATE : / 201

स्वस्थ वातावरण प्रदान किया जा सके तथा सभी बालकों को मिल-जुलकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में शिक्षा ग्रहण कर सकें। साथ ही, अध्यापकों को भी इनके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए तथा इनकी व्यक्तिगत समस्याओं में रुचि लेकर उन्हें आत्मीयता के धरातल पर सुलझाना चाहिए।

6. विशिष्ट कार्य-प्रणाली Unique Process → इस प्रकार के बालकों को शिक्षा प्रदान करने विद्यालय को विशिष्ट प्रकार की कार्य-प्रणाली अपनानी चाहिए। परम्परागत रूप से विद्यालय जो सामान्य कार्य प्रणाली अपनाता चला आ रहा है, हो सकता है वह कार्यप्रणाली इन बालकों की दृष्टि से सार्थक सिद्ध हो। अतः स्कूल प्रबन्धन व सम्बन्धित लोगों को इस तथ्य का बारीकी से अध्ययन कर विद्यालय की कार्य-प्रणाली में उन महत्वपूर्ण नीतियों एवं प्रणालियों का समावेश करना चाहिए जो इनके शिक्षा ग्रहण

PAGE No.
DATE: / / 201

करने के मार्ग को सहज रूप से प्रशस्त कर सकें।

7. अध्यापकों एवं अभिभावकों की भूमिका
Role of Teachers and parents → इस प्रकार की शिक्षा में अध्यापकों की भूमिका एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है अध्यापकों एवं अभिभावकों के सहयोग के बिना इस प्रकार के बालकों की शिक्षा को प्रभावी स्वरूप प्रदान नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से एक और अध्यापकों को जहाँ ऐसे बच्चों के साथ मित्रभतापूर्वक, स्नेहपूर्ण, अपनत्व भरे व्यवहार का परिचय देना चाहिए तथा उनकी आवश्यकताओं को गम्भीरतापूर्वक लेकर उनका यथासम्भव समाधान खोजना चाहिए। वहीं दूसरी ओर अभिभावकों को भी ऐसे बच्चों के साथ किसी प्रकार का भेदभाव, दुर्व्यवहार या उपेक्षा का भाव प्रदर्शित नहीं करना चाहिए तथा यथासम्भव उन्हें प्रसन्नचित्त एवं आत्मविश्वासी बनाये रखने के प्रयास